Vol 6 Issue 6 July 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | July - 2016

Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal
ISSN No : 2230-7850 Impact Factor : 4.1625 (UIF) [Yr. 2016]

Indian Streams Research Journal

कबीर और नागार्जुन की दृष्टि में समानता

अशोक बैरागी
पी–एच. डी. रिसर्च फेलो (हिन्दी), नेट–जेआरएफ
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत.

प्रस्तावना :–

भारत में ही नहीं अपितु विश्व में कबीर हमेशा प्रासंगिक रहेंगे। यह सर्वमान्य तथ्य है। भक्तिकालीन निर्गुण संत कवियों की कविता के केन्द्र में समाज है। *''जब बात कबीर की आती है तो यह निर्विवाद रूप से माना जाता है कि तत्कालीन समाज की रीति–नीति उन्हें उद्वेलित कर रही थी, इसलिए बार–बार जिज्ञासु कबीर की कविता सामाजिक चेतना में गोता लगाती है।''*[1]

आधुनिक युग के पुरोधा और प्रगतिवादी कवि नागार्जुन जनकवि है। उनकी लोक दृष्टि अत्यंत व्यापक है। डॉ. प्रकाश चन्द्र गुप्त के अनुसार– *''नागार्जुन ऐसे साहित्यकार हैं, जो अभावों में ही जन्में है, पीड़ित वर्ग के कष्टों को उन्होंने स्वयं झेला है। निःसन्देह ऐसा ही व्यक्ति भारत की निम्नवर्गीय जनता का सच्चा सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व कर सकता है।''* वे आज को किस प्रकार बेबाकी से बयान करते है, जिस प्रकार कबीर किया करते थे। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं योजनाओं की विफलता के यथार्थ चित्र भी नागार्जुन की कविता में मिलते हैं –

''पॉच वर्ष की बनी योजना, एक नहीं दो तीन।
कागज के फूलों ने ले ली, सबकी खुशबू छीन।।''

कबीर ने मूर्ति पूजा का भी घोर विरोध किया है। मूर्ति पूजने के फेर में जनता एक दूसरे को मार काट रही थी। ये मूर्तियॉ ही लोगों के आपस में लड़ मरने का करण बनी हुई थी–

''पाहन पूजे हरि मिलें, हम लें पूज पहार।
घर की चक्की कोई न पूजे, पिसा खाय संसार।।''[2]

कबीर की भाषा जनता की भाषा होती थी। स्थान बदलने के साथ उनकी भाषा भी बदल जाती थी। इसी विशेषता का प्रभाव जनता पर पड़ता था और लोग उनके मुरीद होते चले जाते थे। वे जो साखी कहते थे उनके शिष्य उसे स्मरण कर लेते थे। कबीर ने जाति–पॉति, ऊंच–नीच की भावना का खण्डन किया है। उनकी भाषा भोजपुरी, राजस्थानी, पंजाबी, अरबी, हिन्दी, ब्रज, अवधी, फारसी और लोक भाषा हुआ करती थी। डॉ. श्याम सुन्दर दास ने कबीर ग्रंथावली में स्पष्ट उल्लेख किया है– *''कबीर का सारा जीवन अंधिविश्वासों का विरोध करने में ही बिता था।''*[3]

नागार्जुन की दृष्टि जितनी व्यापक है उतनी सूक्ष्म भी। उनकी दृष्टि शोषित, पीड़ित, वंचित जनता की ही दृष्टि बन जाती है। वे नारकीय व्यवस्था की काली करतूतों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करते है। इसे वे अपनी सामुहिक जिम्मेदारी मानते है-

''मैं न अकेला कोटि-कोटि में मुझ जैसे तो
सबको ही अपना-अपना दुख है वैसे तो
पर दुनिया को नरक नहीं रहने देंगे हम।''[4]

इस प्रकार की रचना से नागार्जुन ने अपनी दृष्टि को कबीर के समान करने की चेष्टा की है। आज तक कबीर के बाद नागार्जुन का छोड़कर ऐसा कोई कवि या लेखक नहीं आया जो कबीर की तरह के व्यंग्य और कटाक्ष समाज की कुरूतियों पर कर सके। कवि नागार्जुन की एक अविस्मरणीय कविता 'अकाल और उसके बाद' जिसमें अकाल की भयावहता और उसके बाद के सुखद क्षणों की अनुभूति गहरी संवेदनाएँ जगाये बगैर नहीं रह सकती। मात्र आठ पंक्तियों में बाबा ने इतनी बड़ी बात को बखूबी दर्शाया है कि बड़े-बड़े कवि, बड़ी कविताओं में वह चमत्कार नहीं दिखा सके। प्रख्यात कवि और समालोचक 'अशोक वाजपेयी' ने आठ पंक्तियों की इस छोटी सी कविता को नागार्जुन की सर्वश्रेष्ठ कविता बताते हुए कहा है कि हिन्दी की यदि दस उत्कृष्ट छोटी कविताओं का चयन किया जाए तो इस कविता को उसमें शामिला करना अनिवार्य हो जाएगा। अकाल की विभीषिका पर ऐसा वर्णन अन्यत्र उपलब्ध नहीं है-

''कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास।
कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उसके पास।।
कई दिनों तक लगी भीत पर, छिपकलियों की गश्त।
कई दिनों तक चूहों की भी, हालत रही शिकस्त।।''[5]

जब कबीर और नागार्जुन पीड़ितों की बात करते हैं तो दोनों की दृष्टि एकाकार हो जाती है। कबीर ने तब भक्तिकाल में समाज का प्रतिनिधित्व किया था जब जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी और नागार्जुन ने अब किया है जब आमजन सब कुछ पाकर भी भूखा है, नंगा है और हर पग पर छला जा रहा है। आधुनिक युग के कवियों में नागार्जुन ही ऐसे कवि है, जो कबीर को आज में प्रकट कर पाए है। बाकी कवि तो अपनी-अपनी विधाओं और प्रेम, मांसलता, प्रकृति, और ओज जैसे विषयों में ही बंधकर रह गए। ऐसी बात नहीं है कि नागार्जुन के अतिरिक्त किसी लेखक या कवि ने समाज की इस दुर्दशा पर नहीं लिखा हो, लेकिन जो दृष्टि नागार्जुन ने पाई थी वह वो न पा सके।

''कबीर के समान प्रखर और तेजस्वी युग दृष्टा और दूरदर्शी, प्रेम और ज्ञान से समन्वित व्यक्तित्व की खोज कर पाना कठिन है। पथविचलित और भ्रांत समाज को उन्होंने अपनी निर्भीक फटकार की कटु औषध और प्रेम रस से भीगी संजीवनी दोनों साथ-साथ प्रदान की। .....समन्वय के लिए त्याग और ग्रहण दोनों ही आवश्यक है, परन्तु विवेकपूर्ण ग्रहण और त्याग के लिए आधार भूमि निश्चित करनी होती है।''[6] इतिहासकारों ने माना है कि संत कबीर द्वारा शुरू किए गए नए आन्दोलन से लोकमत ही नहीं राजमत भी प्रभावित होने लगा। अकबर के विचार कबीर के दार्शनिक चिंतन से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। यह महात्मा कबीर की चिंतन धारा ही थी, जिसमें निमग्न होकर शहंशाह धीरे-धीरे मुल्लाओं के प्रभाव से मुक्त हो गया। अकबर ने हिन्दुओं के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई। इतना ही नहीं उसने युद्धबंदियों पर दास और मुसलमान बनाने की प्रथा पर १५६२ ई. में रोक लगा दी। हिन्दुओं को तीर्थ यात्रा कर और जजिया कर से मुक्त कर दिया। यह महात्मा कबीर के दार्शनिक चिंतन का ही परिणाम था, जिसने अकबर के शासन काल में नवयुग के अभ्युदय की कल्पना को साकार किया। कतिपय प्रख्यात इतिहासवेत्ता भी इस सच को स्वीकार करते हैं कि कबीर साहब के दार्शनिक चिंतन को स्वीकार करके ही अकबर ने परंपाराओं की तुलना में विवेक को महत्व दिया। कबीर ने कोई प्रामाणिक ग्रंथ नहीं लिखा, किंतु उनकी रचनाओं को उनके शिष्यों ने संकलित किया जिनमें बानी, बीजक, साखी, सबद और रैमेनी प्रमुख है। 'बीजक' कबीर का सबसे प्रामाणिक और पुराना ग्रंथ है। आज भी समाज में इस ग्रंथ को विशेष सम्मान के साथ देखा जाता है डॉ. शुकदेव सिंह ने इसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है- *''कबीरदास के सिद्धान्त और काव्य का जितना सुन्दर समाहार इस ग्रंथ में उपलब्ध है, उनके जाने माने अन्य ग्रंथ में नहीं।''*[7]

विविध प्रकार के इन घटना प्रसंगो में नागार्जुन उत्पीड़ित समाज के प्रतिनिधियों की करूणामूर्ति गढ़ने के साथ हमारी सामाजिक व्यवस्था के अमानवीय पक्षों को भी उद्घाटित करते चलते है। निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि सामाजिकता से ओत-प्रोत नागार्जुन की करूणा के दायरे में अकिंचन, दलित-पीड़ित और निरूपाय-निस्सहाय लोगों की भरमार है। मैनेजर पाण्डेय ने नागार्जुन पर लिखे अपने लेख में लिखा है- *''दलित साहित्य के आन्दोलन के उभार के साथ दलित जीवन की पीड़ा यातना और संघर्ष पर बहुत सारी कविताएँ लिखी गई है, लेकिन इस आन्दोलन के पहले की हिन्दी कविता में दलित जीवन के दुख द्वन्द्व और संघर्ष की उपस्थिति लगभग नहीं के बराबर है। इस सच्चाई को ध्यान में रखिये तो, 1977 में लिखी कविता 'हरिजन गाथा' हिन्दी कविता की एक विशिष्ट उपलब्धि है।''*[8]

नागार्जुन के काव्य संसार से गुजरते हुए इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि नागार्जुन लोक-चेतना के कवि है। यह लोक उनमें काफी सहज स्वाभाविक रूप में हर जगह विद्यमान है। भाव-भाषा से लेकर कथ्य-शिल्प तक में। नागार्जुन की भाषा सीधी, बेबाक, बेलाग और बिल्कुल ठेठ भाषा है। कबीर की सी भाषा नागार्जुन ने पाई है। जहाँ भाव, तथ्य और कथ्य प्रधान होते हैं न कि भाषा

और शिल्प। परन्तु वह भाषा ऐसी भी नहीं की खारिज की जा सके। उनकी अपनी ही एक कविताई शैली है। जिनमे खुली हवाओं सी ताजगी है। भाषाविद् चाहें तो उन्हें नकार सकते हैं, परन्तु उनकी कविताएँ ऐसी प्रतिमान हैं जिन्हें पाकर भाषा और साहित्य गौरवान्वित ही महसूस करता है। डॉ. नामवर सिंह ने उनके बारे में बहुत सटीक टिप्पणी की है कि- ***''तुलसीदास के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी कविता की पहुँच किसानों की चौपाल से लेकर काव्य–रसिकों की गोष्ठी तक है।''***[8]

कबीर सर्वप्रथ समाज सुधारक थे उसके पश्चात ज्ञानी और कवि। कबीर ने अपनी प्रखर भाषा और तीखी भावाभिव्यक्ति से साहित्यिक, मर्यादाओं का अतिक्रमण भले ही कर दिया हो परन्तु उन्होंने जो काव्य सृजन किया उसके द्वारा साहित्य तथा धर्म में युगान्तर अवश्य उपस्थित हुआ है। परमात्मा के साथ भक्त की समीपता कबीर के व्यक्तित्व में जितनी परिलक्षित होती है, वैसी किसी और में नहीं। ***''हरि मोर पिउ मैं राम की बहुरिया''***। उनकी वाणी क्रांतिकारी परिवर्तन की प्रतीक थी। कबीर ने लोकमानस में सदियों से रचे बसे संश्रिवष्ट भावों को उद्दात एवं व्यापक रूप देकर पुराण पंथी जातिवादी विचारधारा में बॉधे जाने से रोकने की कोशिश की। साहित्य, धर्म और अध्यात्म में कबीर का व्यक्तित्व अतुलनीय है।

''सुखिया सब संसार है, खाये और सोय
दुखिया दास कबीर है जागे और रोय।''

उनका साहित्य उस समाज का दर्पण है, जिसकी ऑच में स्वयं कबीर भी झुलसे है। आमजन की पीड़ा को अपनी अनुभूति देना वह भी निहायत सुबोध और सरल भाषा में कबीर की अतुलनीय प्रतिभा का उदाहरण है। वे अपनी शैली में फटकारते भी है, ललकारते भी है और प्रेम पूर्वक भी विनम्रता से ढाढस बंधाकर उर्जा प्रदान करते है। अतं में कबीर का यह दोहा कबीर के सम्पूर्ण भक्ति कर्म को बयान करता हुआ प्रतीत होता है–

''सद्गुरू के परताप से मिटी सब दुख दंदं
कह कबीर दुविधा मिटी, गुरू मिलिया रामानंद।।''

सन्दर्भ ग्रंथ

१.कबीर –डॉ. कांति कुमार जैन, (भूमिका से) .
२.भारत में सामाजिक परिवर्तन के प्रेरणा स्त्रोत – डॉ. माता प्रसाद, पृष्ठ ४५ .
३.भारत के सामाजिक क्रांतिकारी – देवेन्द्र कुमार बेसन्तरी, पृष्ठ ५३ .
४.पुरानी जूतियों का कोरस – नागार्जुन , पृष्ठ १६ .
५.अकाल और उसके बाद – छायावादोत्तर काव्य संग्रह – सं. रणजीत सिंह, पृष्ठ ८७ .
६.भुड़कुड़ी की संत परंपरा, पृष्ठ २११ .
७.कबीर और जीवन और दर्शन – उर्वशी सूरती, पृष्ठ ४६ .
८.काव्य की भूमि और भूमिका का विस्तार – मैनेजर पाण्डेय, समकालीन चुनौती, नागार्जुन जन्मशती विशेषांक – सम्पादक सुरेन्द्र प्रसाद 'सुमन', पृष्ठ २१ .
९.प्रतिनिधि कविताएँ – डॉ. नामवर सिंह (भूमिका से) .

अशोक बैरागी
पी–एच. डी. रिसर्च फेलो (हिन्दी), नेट–जेआरएफ , देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org